B.A. Part I Hon.

Paper II B. वैदिक युगीन कृषि

Ques 11. Agriculture during Vedic Period :

Answer- वैदिक युग के आर्थिक जीवन के मुख्य आधार कृषि और पशुपालन थे। इस समय तक आर्य लोग स्थाई रूप से ग्रामों और नगरों में बस गये थे और उन्होंने कृषि, पशुपालन तथा विविध प्रकार के शिल्पों द्वारा अपनी आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करना प्रारम्भ कर दिया था। खेती का उनकी दृष्टि में बहुत महत्वपूर्ण स्थान था। ऋग्वेद के एक मंत्र में ऋषि कवष ऐलूष ने द्यूतकर्म की निन्दा करते हुए कहा है — पासों का खेल मत खेलो, खेती करो जो वित्त उससे प्राप्त हो उसे ही बहुत मानकर भोगा करो। खेती को अपने आर्थिक जीवन का आधार मानने के कारण वैदिक आर्य पृथ्वी को माता की दृष्टि से देखते थे। अथर्ववेद के पृथ्वी सूत्र में कहा गया है — पृथ्वी मेरी माता है, मैं पृथ्वी का पुत्र हूँ।

वेद मंत्रों में उन अन्नों का उल्लेख मिलता है, जिनकी खेती इस युग में की जाती थी। ऋग्वेद में केवल धान और जौ का उल्लेख है। यव से जव अभिप्रेत है और धान या धान्य से चावल ऋग्वेद में तैयार हुई फसल को काटने उसके पूले बनाने, खलिहान में पूलों ले जाकर उनसे अनाज को पृथक करने और फिर उसे नाप कर स्थितियों में संचित करने का उल्लेख है जब खेती इतनी विकसित दशा में हो तो यह कल्पना करना असंगत नहीं होगा कि ऋग्वेद के युग में आर्यों को अन्य भी अनेक अन्नों का ज्ञान होगा और वे उनकी भी

Scanned with CamSc

खेती किया करते होंगे।

यजुर्वेद के एक मंत्र में निम्नलिखित अन्नों के नाम दिये गये हैं: व्रीहि (धान), यव (जौ), माष (उड़द) तिल, मुद्ग (मूँग), खल्व (?) प्रियगं, अणु, श्यामक (सवाँई) नीवार, गोधूम (गेहूँ) और मसूर। अथर्ववेद में व्रीहि, माष, यव और तिल का उल्लेख है। अन्नों व दालों के अतिरिक्त कतिपय अन्य कृषिजन्य पदार्थों का भी वैदिक युग में आर्यों को ज्ञान था। इनमें इक्षु (ईख) उल्लेखनीय है। अथर्ववेद में इक्षु का उल्लेख मिलता है। ब्राह्मण ग्रन्थों तथा आरण्यकों में भी अनेक ~~अन्नों~~ अन्नों तथा अन्य कृषिजन्य पदार्थों के नाम आये हैं। वेदों में फसलें बोने और काटने आदि के सम्बन्ध में अनेक निर्देश विद्यमान हैं। उस समय जमीन को जोतने के लिए हलों का प्रयोग किया जाता था और उन्हें चलाने के लिए बैल जोते जाते थे। वेदों में हल के लिए लांगल और वृक शब्दों का प्रयोग हुआ है। यजुर्वेद में हल के लिए 'सीर' शब्द का प्रयोग मिलता है। हल का जुआ बैलों की जोड़ी पर रखा जाता था। यद्यपि साधारणतया हल चलाने के लिए दो बैल प्रयोग में लाये जाते थे पर ऐसे भारी हल भी होते थे जिन्हें खींचने के लिए 6-8 या और भी अधिक बैल जोते जाया करते थे। जमीन की पैदावार को बढ़ाने के लिए खेतों में खाद भी डाला जाता था जो गोबर का होता था। खेतों की सिंचाई भी की जाती थी।

Scanned with CamSc

ऋग्वेद के एक मंत्र में जल के दो प्रकार बताये गये हैं। खनित्रिमा और ~~स्वयंजा~~ स्वयंजा। खनित्रिमा वह जल होता है जिसे खोदकर प्राप्त किया जाय जैसे कुएं का जल। नदी, नालों, स्रोतों, वर्षा आदि के जल को स्वयंजा कहते ~~हैं~~ थे। ऋग्वेद के अनेक मन्त्रों में कूपों का उल्लेख मिलता है। ऐसे कूपों का भी जिसका जल कभी समाप्त नहीं होने वाला होता था। ऋग्वेद में ऐसे संकेत भी विद्यमान हैं जिनमें रस्सी और डोल से और रहट द्वारा कुओं से पानी निकाला जाना सूचित होता है। खेतों की सिंचाई के लिए नालियां बनाई जाती थी।

ऋग्वेद के अनुसार खेती के लिए हल द्वारा भूमि को जोतने की शिक्षा सर्वप्रथम अश्विनी द्वारा दी गयी थी। अथर्ववेद में लिखा है कि पृथ्वी वैन्य ने सबसे पहले खेती करना और खेती द्वारा सस्य उत्पन्न करना प्रारम्भ किया था। अश्विनी से शिक्षा प्राप्त कर आर्यों ने जब एक बार खेती करना शुरु कर दिया तो उसमें निरन्तर उन्नति होती गयी। हल से खेत को जोतकर उसमें बीज बोये जाने लगे। पौधों की सिंचाई की जाने लगी और फसल के तैयार हो जाने पर उसे दृणा (दराती) से काट कर पर्षों (पूलियों) में बाँधकर खल (खलिहान) में लाया जाता था। आज

Scanned with CamScanner

भी भारत में खेती का प्रायः यही ढंग है। शतपथ ब्राह्मण में खेती की विविध प्रक्रियाओं के लिए कर्षण (जुताई) वपन (बुआई) लुन (कटाई) और मृणान (मंडाई) शब्दों का प्रयोग किया गया है। जब अन्न अलग हो जाता था, तो तितउ (छननी या सूप) से उसे छान लिया जाता था। फिर ऊर्दर से उसे नाप कर सुरक्षा के लिए स्थीव (अनाज जमा करने का कोठा) में रखा दिया जाता था। वैदिक युग में आर्यों का आर्थिक जीवन कृषि पर निर्भर था। अतः उन्होंने 'क्षेत्रपति' नाम से एक ऐसे देवता की भी कल्पना कर ली थी जिसकी कृपा से उनके खेत फलते - फूलते थे और जिससे वे यह प्रार्थना किया करते थे कि उनके खेत सफल बनें और उनसे उसी प्रकार धन - धान्य का प्रवाह बहता रहे जैसे कि गौ से दूध की धाराएं बहती हैं।

खेती के साथ पशुपालन का घनिष्ठ सम्बन्ध है। वैदिक युग के आर्य जहाँ खेती के लिए पशु पालते थे वहां साथ ही दूध घी की प्राप्ति और सर सवारी आदि के लिए ~~विविध~~ ~~विविध~~ भी विविध पालतू पशुओं का पालन किया करते थे। पालतू पशुओं में बैल और गाय प्रधान थे। हल चलाने के अतिरिक्त रथों को खींचने के लिए भी बैलों का प्रयोग किया जाता था। ऋ ऋग्वेद के एक मंत्र में सारथि के

Scanned with CamScanner

भी द्वारा चलाये जाने वाले ऐसे वाहन का वर्णन है, जिनमे ऋषभमा जुड़ा हुआ था। गाय का उपयोग दूध और घी के लिए था। गौ के घी दूध को आर्यलोग बहुत उपयोगी व स्वास्थ्यप्रद मानते थे। इसलिए वे उसे माता तथा अघ्न्या समझते थे। गाये बड़ी संख्या मे पाली जाती थी। अतः यह पहचानने के लिए उनके कानो पर अनेक प्रकार के चिन्ह भी बना दिये जाते थे। ऋग्वेद के एक मंत्र मे सहस्त्र अष्टकर्ण्य गौवो को दान मे देने का उल्लेख है। जिन गौवो के कान पर 8 अंक का चिन्ह बना दिया गया हो उन्हे अष्टकर्ण्य कहते थे। कानो प दात्र (दराती) स्थूण (खम्बा) आदि के चिन्ह भी पहचान के लिए बना दिये जाते थे। वैदिक युग के आर्यो के आर्थिक जीवन मे गौवो का इतना महत्वपूर्ण स्थान था कि विनिमय के लिए भी गौवो का मूल्य निर्देशन करने के लिए प्रयुक्त किया जाता था।

गाय और बैल के अतिरिक्त अन्य भी अनेक पशुओं को वैदिक युग के आर्य पाला करते थे। इनमे घोड़ा, ऊँट, भेड़, बकरी, हाथी, गधा, मृग और कुत्ता मुख्य थे। क्योंकि घोड़े की सवारी और युद्ध मे काम आते थे अतः उन्हे भी बहुत महत्व दिया जाता था। घोड़े के साथ गधो को पालने की प्रथा भी वैदिक युग मे थी। ऋग्वेद के एक मंत्र मे ऋजीप प्रपथ

काण्व द्वारा प्रस्कण्व के दान की प्रशंसा में यह कहा गया है कि उसने सौ गर्दभ सौ भेड़ और सौ दास दान में दिये। बैलों और घोड़ों के समान ऊँटों को भी वैदिक युग में पालतू पशुओं के रूप में प्रयुक्त करना प्रारम्भ हो गया था। एक मंत्र से यह संकेत मिलता है कि ऊँट का प्रयोग युद्ध के लिए भी किया जाता था। वैदिक युग में हाथी को भी पालतू बना लिया गया था और उसे राजकीय सम सवारी समझा जाता था। भैंस के समान भैंस (महिष) को भी वैदिक युग में पाला जाता था। (अजार) बकरी और अवि (भेड़) के पाले जाने के संकेत भी वैदिक साहित्य में पाये जाते हैं। भेड़ों को पालने का एक प्रायोजन यह भी था कि उनकी ऊन से कपड़े बनाये जा सकें। ऋग्वेद में भेड़ों की ऊन के वस्त्रों का वर्णन है और परुष्णी (रावी) नदी के समीपवर्ती प्रदेश की ऊन की विशेषतया उल्लेख है।

मान्दा